Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

मलायालम में रामकथा

Dr. Pradeep Kumar Singh*

President- Hindi Department, Sathaye College (Mumbai Vidyapeeth) Mumbai - Maharashtra

सार - रामायण भारतीय साहित्य का आधार ग्रंथ है। उत्तर भारत में तुलसी रामायण का जो स्थान है, वही केरल में एशुत्तच्छन द्वारा विरचित 'आध्यात्म रामायण किहिपांट' का है। सोलहवीं शती में रचित इस लोकप्रिय कृति का पाठ साल में पूरे एक महीने - श्रावण (मलयालम कर्कडकमास) में निरन्तरता से किया जाता है। केरल के प्रसिद्ध त्योहार ओणम से पूर्व यह अनुष्ठान संपन्न होता है। श्रीरामचन्द्र जी की वन यात्रा से केरल का भी संबंध माना जाता है। केरल का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान 'शबरीमला' के मार्ग में पंपासर के पास स्थित 'शबरीपीठ', वनवास काल में राम-शबरी के दर्शन को प्रमाणित करता है। 'मला' शब्द मलयालम में पर्वत के लिए प्रयुक्त होता है।

----------X----------

मलयालम राम साहित्य काव्य, नाटक तथा उपन्यास विधाओं में उपलब्ध है। इनमें सर्वाधिक वैभवपूर्ण विधा काव्य ही रहा। इसके अतिरिक्त लोकगीतों तथा बाल साहित्य के रूप में भी कुछ कृतियाँ उपलब्ध है। यही नहीं चित्रकला तथा भित्ति चित्रों (MURAL PAINTINGS) में भी 'रामचरित' के दर्शन मिलते हैं। मलयालम रामकाव्य परंपरा,लोक गीतों से प्रारंभ होती है। चीरामन नामक कवि द्वारा रचित "रामचरित" मलयालम का प्रथम गीत है। वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड पर आधारित इसकी रचना द्राविड़ छंद में की गई। इसके पश्चात रामकथा के संपूर्ण स्वरूप को श्री अय्यिप्पिल्ली आशान ने गीतों में प्रस्तुत किया गया है, जिसका नाम 'रामकथाप्पाट्टु' रखा गया। तमिल शब्दों तथा द्राविड़ छंदों की अधिकता, गीतों में कथा रचना आदि, इस कृति को लोकप्रिय बनाने वाले तत्व हैं। इसे केरल का प्रथम गेय महाकाव्य माना जाता है। इस कृति का उद्देश्य श्रामचरितश् को संगीत के माध्यम से आस्वाद्य बनाना है।

स्वच्छंद काव्यधारा से राम भक्ति को प्रश्रय देने वाले कवियों में कुछ विशेष कवियों का नाम उल्लेखनीय है। विशेषकर रामपणिक्कर द्वारा पन्द्रहवीं शताब्दी में रचित 'कण्णश्शरामायणम' का, प्रस्तुत कृति परवर्ती समस्त रामकथापरक रचनाओं के लिए मार्गदर्शक एवं प्रेरणादायक रही है।

लगभग पन्द्रह सौ ईस्वी में पुनम नंपूतिरि ने 'भाषा रामायण' चम्पू मणिप्रावळम शैली में लिखा। 'गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते' के अनुसार प्रस्तुत काव्य में संस्कृत श्लोकों तथा मलयालम गद्यांशों का समावेश है। संस्कृतमय शैली की तुलना में संस्कृत- मलयालम भाषा का मिश्रित रूप जनता को सरल लगने लगा। प्रस्तुत चम्पूकाव्य में पूरी रामकथा वर्णित है। इसमें कुल पाँच ही कांड हैं। बालकांड, अयोध्याकांड, किष्किंधाकांड, युद्धकांड एवं उत्तरकांड । बालकांड में छरू प्रसंग हैं। क्रमशरू रावणोद्भव रामावतार, ताड़कावध, अहिल्या मोक्ष, सीता स्वयंवर और परशुराम विजयाअयोध्याकांड में दो ही प्रसंग हैं- विच्छिन्नाभिषेक और खरवधाकिष्किन्धाकांड के प्रसंग हैं-सुग्रीवसख्यम् ,बालीवध, उद्यानप्रवेश तथा अंगुलीयांकम। युद्धकांड में लंका प्रवेश, रावणवध, अग्निप्रवेश अयोध्या प्रवेश एवं पट्टाभिषेक है। उत्तरकांड में सीता परित्याग, अश्वमेघ तथा स्वर्गारोहण है। केरलीय दृश्यकला 'कुडियाट्टम् के' एक उपभेद चाक्यारकूत्तु का अभिनय करने वाले चाक्यारों के लिए इस कृति के कई प्रसंग प्रियकर हैं। विशेषकर किष्किन्धाकांड का अंगुलीयांक प्रसंग चाक्यारों को सर्वाधिक पसन्द है।

मलयालम रामकथात्मक काव्यों में सर्वाधिक लोकप्रिय कृति सोलहवीं शताब्दी में जीवित एशुत्तच्छन द्वारा विरचित 'आध्यात्म रामायण किहिपाट्टु' है। मलयालम में 'किहि' का तात्पर्य पक्षी, पाट्टु' का तात्पर्य 'गीत' है। पक्षी के माध्यम से गेय शैली में रामकथा प्रस्तुत करने के कारण 'किहिपाट्टु' नाम प्रचलित हो गया। केरलीय गांवों में प्रचलित नामजप परंपरा को स्मरण दिलाने वाला प्रारंभिक अंश इस प्रकार है-

श्रीरामा रामा रामा श्रीरामचन्द्रा जय श्रीरामा रामा रामा श्रीरामा भद्रा जया।

www.ignited.in

श्रीरामा रामा रामा सीताभिरामा जय श्रीरामा रामा रामा लोकाभिरामा जया।

श्रीरामा रामा रामा रावणान्तका रामा श्रीरामा मम हृदि रमतां रामा रामा ।।

काव्य को जनहृदय में चिरंतन स्थान देने में काव्यगत शब्द और छंद कितना योग दे सकता है, यह तथ्य रामायण में प्रमाणित होता है। 'एशुत्तच्छन' के पश्चात् रामकथात्मक काव्य लिखने वालों में केरल वर्मा का नाम उल्लेख्य है। उनकी दो कृतियाँ हैं। केरल वर्मा 'रामायण और पाताल रामायण'। केरल वर्मा रामायण का दूसरा नाम 'वाल्मीकि रामायण किहिपाट्टु' है। केरल वर्मा ने एशुत्तच्छन की कुछ पंक्तियों को ज्यों का त्यों 'पाताल रामायण' में जोड़ दिया है। आट्टक्कथा (कथकहिपद)के रूप में रचित कोट्टारक्करा तम्पुरान का रामनाट्यम साहित्यिक कृति के रूप तथा नाट्यकला के क्षेत्र में विशेष उल्लेखनीय है। राम कथा के आठ प्रसंगों को आठ दिनों में प्रस्तुत करने योग्य पद्य रूप दिया गया है। केरल में प्रसिद्ध 'तुल्लल् कथा' काव्य धारा के प्रमुख कवि श्री कुंचन नंपियार ने छरू प्रमुख रामकथा मिश्रित तुज्जल काव्य लिखे हैं। 'सीतास्वयंवर' इसमें उल्लेखनीय है। आधुनिक युग में रामकाव्य का वह स्वरूप नहीं रहा जो में था। मलयालम रामकाव्य परंपरा में सभी लक्षणों से युक्त महाकाव्य के रूप् अषकत्तु पद्मनाभ कुरुप द्वारा रचित श्रामचन्द्रविलासश् गणनीय है।

आधुनिक युगीन मलयालम पद्य साहित्य में कई खंडकाव्यों के रूप में भी रामकथा की प्रतिष्ठा हुई है। मलयालम कवित्रय में प्रसिद्ध वल्लतोह नारायणमेनोन की 'कांचनसीता' और कुमारनाशान की 'चिन्ताविष्टयाय सीता' इस श्रेणी में आते हैं। उसके बाद वायलर रामवर्मा का श्मा निषादाश्, उण्णिकृष्णन नायर का लक्ष्मण विषाद आदि मलयालम के प्रमुख रामकाव्य हैं। आधुनिक युगीन रामकाव्य की एक प्रमुख विशेषता यह है कि कविगणों ने पौराणिक पात्र श्रीरामचन्द्र जी को मानवीय पृष्ठभूमि पर उतार कर अनेक काव्यों को जन्म दिया है। इनमें एन. वी. कृष्णवारियर का 'चिन्ताग्रस्त श्रीराम', डॉ. तोन्नकल नारायण का 'राम विलाप', ओ.एन. वी. कुरुप की श्सरयू नदी की ओरश्यूसफअली केच्चेरी का राघवीयम् आदि उल्लेखनीय है। रामकथा के अनेक प्रसंगों का आधुनिकीकरण इन रचनाओं का उद्देश्य है। इस प्रकार पाट्टु, चम्पू ,किळिप्पाट्टु, आट्टक्कथा, महाकाव्य, खंडकाव्य, आदि अनेक विधाओं में मलयालम का रामकाव्य बिखरा पड़ा है।

पन्द्रहवीं शती में रचित तथा सन १९९७ ई.में केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम् से प्रकाशित चित्र रामायण केरल की रामायण परंपरा की विलक्षण रचना है। इसके लेखक अज्ञात हैं। प्रस्तुत कृति से इसके रचयिता के संबंध में मात्र यही सूचना प्राप्त होती है कि कृतिकार केरल के आलप्पुषा जिले के कोलिमुक्कु निवासी थे। जिन्होंने अपने गुरु जो एक ब्राह्मण कवि थे की आज्ञा से प्रेरित होकर इसका अंकन था। संस्कृत के प्रोफेसर एवं केरल विश्वविद्यालय के ओरिएंटल रिसर्च न्स्टिट्यूट तथा हस्तलेख पुस्तकालय के निदेशक डॉ. के. विजयन जी ने इसका संपादन किया था।

सन् १४५३ ई. में ताड़पत्रों पर अंकित 'चित्ररामायण' दुर्लभ तथा अचर्चित मलयालम रामकाव्य कृति है। इसमें कुल ३१८ चित्र हैं। संपूर्ण रामायण महाकाव्य चित्रों में अंकित होने से 'चित्ररामायण' ग्रंथ नाम अत्यंत सार्थक है। अज्ञात लेखक ने आवश्यक संदर्भ -संकेतों सहित रामायण की पंक्तियाँ चित्रों के साथ उद्धृत की हैं। वाल्मीकि रामायण तथा रामानंद द्वारा विरचित मूल संस्कृत,' आध्यात्म रामायण', चित्ररामायणकार की स्रोत सामग्री रही होगी जो प्रमाणित है। ताड़पत्र तथा वर्तिका-चित्ररामायणकार की लेखन-सामग्री रही। कागज तथा मुद्रणकला के आविर्भाव से पहले केरल में ताड़पत्र का प्रचुर प्रयोग था। 'चित्ररामायण' केरल में पन्द्रहवीं शती में चित्रकला की रेखाचित्र शैली में प्रचलित होने का दृष्टांत है। ताड़पत्रीय चित्रकला की एक नई शाखा भी इससे विकसित हुई। यह उल्लेखनीय है कि शब्दों की अपेक्षा चित्रों के माध्यम से भावार्थ संप्रेषण प्रभावशाली ढंग से होता है।

देशकालातीत महत्व रखने वाली कृति श्रामायणश् की प्रासंगिकता सर्वविदित है। वैश्विकता के संदर्भ में तो मानव को मानव बनाए रखने के लिए तथा मानवीय मूल्यों की सुरक्षा के लिए रामायण के अनेक प्रसंग, यानी श्रीरामचन्द्र जी का संपूर्ण जीवन चरित, महती भूमिका निभाती है। स्त्री सशक्तिकरण, दलित संवेदना, परिस्थिति की जैसे बहुचर्चित विषयों के दृष्टिकोण से तो रामकथा प्रासंगिक है ही हाल ही में जुलाई २०१० में मलयालम में प्रकाशित वी. टी. जयदेवन की लम्बी कविता श्हरित रामायणश् इक्कीसवीं सदी की केन्द्रीय समस्या, परिस्थिति पर आधारित है। इक्यावन भागों में आबद्ध यह कविता प्रकृति के विभिन्न दृश्यों के मनोरम चित्रों से रामकथा प्रसंगों को जनहृदय में अंकित करती है। अंत में राम पहचानते हैं कि सरयू सीता ही हैं। ऐसी सीता की ओर लौटे बिना राम अन्यत्र कहाँ जा सकते हैं? प्रकृति पुरुष संबंध की दार्शनिक अनिवार्यता भी यह कविता उद्घोषित करती है।

'हरित रामायण' वस्तुतरू स्मृतियों की क्रमबद्ध परंपरा है। कविता की प्रारंभिक पंक्तियां इस प्रकार है।

www.ignited.in

स्मृतियों का हरा रंग है।

अनगिनत हरीतिमा

अयोध्या के पार्श्ववर्ती जंगल से

गुरुजी के साथ

लंबी यात्राओं में-

स्मृति काव्य के रूप में विरचित इस कविता में राम को नींद में सीता के आगमन की याद आयी। किसी जंगल में पूर्ण गर्भवती सीता के दर्शन हुए। प्रस्तुत कविता के नवें भाग में बताया गया है कि राम को जंगल ही पसंद है। नमी, मिटटी, चिड़ियों, फूलों, जल प्रवाहों से युक जंगल उन्हें प्रिय है। कैकेयी माता से राम पूछते हैं कि अयोध्या से जंगल की ओर राम को कौन उन्मुक्त छोड़ेगा, तब कैकेयी राम को उत्तर देती हैं कि-

तुम्हारे लिए भूमाता की नमी मिट्टी में अनन्त अरण्य की ओर जीवन के अनन्त आकाश की ओर मैं इस सुवर्ण नीड़ का मणिद्वार एक दिन बिना किसी की जानकारी के खुला रखूगी।

'हरित रामायण' की सीता एक ग्राम वधू के समान नैसर्गिक मन से प्रसन्न थी। उसके लिए जंगल, जन्म गृह जैसा था। सीता राम से कहती हैं कि, जंगल के किसी निगूढ़ भाग में घायल मृतप्राय वृद्ध व्याघ्र को औषधि पत्तों से दवा लगाकर उसकी देखभाल करते हुए मैंने तुमको देखा। वृक्ष की ऊँची डाली पर बैठे दुखी नर कोयल को सांत्वना देते हुए मैंने तुमको देखा प्रस्तुत प्रलम्ब कविता के पैंतालीसवें भाग में सीता राम से कहती हैं कि, लक्ष्मण जब मुझे छोड़कर गए तो मेरी दशा उस पक्षी के जैसी थी, जो माता की जानकारी के बिना घोंसले से नीचे गिर पड़ता है। यह अंश ध्यातव्य है-

जंगल

उसका स्नेह युक्त ठंडापन

लताओं की लंबी ऊँगलियाँ

मुझे बुलाते हुए, सुलाते हुए लगा।

प्रस्तुत कविता में कई स्थलों पर गीली या नम मिट्टी का संकेत मिलता है। जो अथर्ववेद के एक सुप्रसिद्ध सूक्तांश, 'माताभूमि, पुत्रोऽहम् पृथिव्यां' का स्मरण दिलाता है। सीता के लिए नम मिट्टी माता सदृश्य है। पंचतत्वों में से सीता के लिए जल तत्व संपन्न पृथ्वी, वैभव का प्रतीक ही है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि रामकाव्य परंपरा अक्षुण्ण है और उसकी प्रासंगिकता किसी भी समस्या के संदर्भ में रामचरित पर आधारित समाधान से स्वयं विदित है। मलयालम कृति 'हरित रामायण' पर्यावरण से संबंद्ध अन्तरराष्ट्रीय समस्या की ओर संकेत करती है। प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री डेविड बोप का कथन इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि, नयी सृष्टि का अर्थ यह हुआ कि यह न ही पुराने क्रमों की नकल करती है, न ही उनकी मौलिक सच्चाई के विपरीत जाती है। वह पुराने क्रमों की हमारी समझ को नए संदों में ढालती है और इसके साथ- साथ हमारे ज्ञान के आयाम को विस्तृत करती है। अस्तु।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य का विशेष मुहायन, भगीरथ मिश्र- पृष्ठ संख्या 77
2. विनय पत्रिका-गोस्वामी तुलसीदास- पृ०-109-110
3. रामचरित मानस३ गोस्वामी तुलसीदास महाभारत अनुशासन पर्व- 115,124
4. कला और संस्कृति३ डॉ० बासुदेव शक्या अग्रवाल पृष्ठ संख्या-21
5. निराला काव्य और व्यक्तित्व, डॉ0 धनंजय वर्मा पृष्ठ संख्या - 38
6. नई कविता में वैयक्तिक चेतना, डॉ० अवध नारायण तिवारी पृष्ठ संख्या- 27
7. साहित्य या आधार दर्शन-जयनाथ नलिन (1967) पृष्ठ सफुया-01
8. वही पृष्ठ संख्या- 42
9. आस्था दो चरण- डॉ० नगेन्द्र लिप्त पृष्ठ संख्या- 391-393

Corresponding Author

Dr. Pradeep Kumar Singh*

President- Hindi Department, Sathaye College (Mumbai Vidyapeeth) Mumbai - Maharashtra